2 वर्ण-विचार Phonology/Orthography

वर्ण या अक्षर Alphabet

प्रत्येक भाषा के अपने स्वरूप को प्रकट करनेवाले अलग-अलग कुछ अक्षर अथवा चिह्न होते हैं जिन्हें 'वर्ण' कहा जाता है।

शब्द का सबसे छोटा खंड, जिसके और खंड न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

अक्षर—वर्ण को सूक्ष्म भेद के साथ 'अक्षर' भी कहते हैं। जिसका क्षर कभी नहीं होता, अ + क्षर यानी जो कभी नष्ट न हो, अर्थात अक्षर का अभिप्राय होता है, वे अक्षर जिनकी ध्वनि नष्ट नहीं होती, सदैव रहती है। अतः छोटी-से-छोटी ध्वनि जो खंडित न हो सके उसे 'अक्षर' कहा जाता है। वर्ण ध्वनि के लिखित रूप के लिए प्रयोग में लाया जाता है; जैसे— अ, आ, क, ख, ग आदि। कुछ विद्वान दोनों को एक ही मानते हैं।

वर्ण के भेद : वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। वर्णों को दो रूपों में बाँटा गया है— स्वर और व्यंजन। हिंदी वर्णमाला इस प्रकार है—

क. स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ = 11 (अं अः) = 13

ख. व्यंजन :

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(ड़्, ढ़्)
त्	थ्	द्	ध्	न्	
प्	फ्	ब्	भ्	म्	
य्	र्	ल्	व्		
श्	ष्	स्	ह्	11+2+33+2 = 48	

संयुक्ताक्षर : क्ष त्र ज्ञ श्र 48+4 = 52

ग. अयोगवाह : 'अं' और 'अः' अयोगवाह हैं। 'अं' को अनुस्वार और **अः** को विसर्ग कहा गया। इन दोनों का प्रयोग स्वरों के बाद किया जाता है; जैसे— प्रायः, प्रातः, अतः आदि। अयोगवाह के उच्चारण से पूर्व स्व आता है। स्वर और व्यंजन के मध्य की स्थिति होने के कारण इन्हें वर्णमाला में स्वरों के बाद रखते हैं। 'अं' क प्रयोग स्पर्श व्यंजनों के पंचम वर्णों (ङ् ञ् ण् न् म्) के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

स्वर Vowel

वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण बिना किसी सहायता के किया जाता है और जिनके उच्चारण में मुँह से हवा के निकलने में कोई बाधा नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं। ऐसे भी कहा जा सकता है कि जो वर्ण अपने उच्चारण में दूसरे वर्ण की सहायता नहीं लेते, वे स्वर हैं; जैसे— अ, आ, इ, उ आदि। इनकी संख्या ग्यारह है।

स्वरों के भेद

उच्चारण की भिन्नता के आधार पर स्वरों के तीन भेद हैं— **ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।**

क. ह्रस्व स्वर *(Short Vowel)* : जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ, ऋ।

ख. दीर्घ स्वर *(Long Vowel)* : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगना (दो मात्रा का समय) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप नहीं हैं; वरन् अपने-आप में स्वतंत्र हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं; अत: इन्हें संधि स्वर भी कहा जाता है। इनकी संख्या सात है— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इनकी संधि इस प्रकार होती है—

अ + अ = आ	इ + इ = ई	उ + उ = ऊ
अ + इ = ए	अ + उ = ओ	अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ		

'ए' को ह्रस्व नहीं माना गया है क्योंकि 'ए' वर्ण 'अ + इ' से मिलकर बना है। दो वर्णों का संयोग होने के कारण यह दीर्घ स्वर है।

ग. प्लुत स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग किसी को पुकारने में या संबोधन करके बुलाए जाने में किया जाता है। इसकी पहचान के लिए स्वर के आगे '३' लगा देते हैं; जैसे—ओ३म। प्राय: इसका प्रयोग संस्कृत में ही किया जाता है।

स्वरों की मात्राएँ

लिखते समय स्वरों का प्रयोग केवल स्वतंत्र रूप से ही नहीं बल्कि व्यंजनों के साथ मिलाकर भी किया जाता है। इस स्थिति में स्वरों का स्वरूप बदल जाता है और इन्हें 'मात्रा' कहा जाता है। व्यंजनों के साथ स्वर मात्रा रूप में लगते हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा		ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
शब्द	कल	काम	कवि	खीर	गुलाब	झूला	कृपा	केश	है	शोर	और

Scanned with CamScanner

प्रथम 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। यह हिंदी के प्रत्येक व्यंजन में जुड़ा रहता है, जो उसके उच्चारण के साथ-साथ ही प्रतीत होता है; जैसे— यदि 'क' बोला जाए तो 'अ' का उच्चारण स्वयमेव ही हो जाता है और यदि इस 'क' व्यंजन को 'अ' मात्रा से अलग करके बोलना हो तो इस व्यंजन के नीचे हलंत (्) लगा देते हैं; जैसे— क्, च्, ज्, त्, थ्, द आदि।

व्यंजन Consonant

जिन वर्णों के उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यंजनों का उच्चारण बिना स्वर के नहीं किया जा सकता। इनकी संख्या मूल रूप में 33 (तैंतीस) है लेकिन कुछ विद्वान इनकी संख्या 35 मानते हैं। इसका विवेचन आगे किया गया है। इन 33 व्यंजनों को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है— **स्पर्श, अंतस्थ और ऊष्म**।

क. स्पर्श व्यंजन *(Mutes)* : जिन अक्षरों अथवा वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न भागों; जैसे— ओष्ठ, दंत, तालु, जिह्वा और मूर्धा तथा इनके मेल से कंठतालु, कंठोष्ठ आदि का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन की संज्ञा दी जाती है। स्पर्श व्यंजन 27 हैं। प्रत्येक वर्ग का नाम उस वर्ग के पहले व्यंजन के नाम पर रखा गया है; जैसे—

कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(ड़्, ढ़्)
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	

ध्यान दें—

व्यंजन 33 हैं या 35 : व्यंजन पहले 33 माने जाते थे परंतु टवर्ग के अंतर्गत **ड़** और **ढ़** के प्रचलन के कारण अब व्यंजनों की संख्या पैंतीस हो गई है। हिंदी में **ड** और **ड़** तथा **ढ** और **ढ़** अलग-अलग व्यंजन हैं। उदाहरण के लिए '**लड़ना**' और '**डकारना**', इन दोनों के उच्चारण में बहुत अंतर है। इसी प्रकार '**बूढ़ा**' और '**ढक्कन**', इन दोनों के उच्चारण में अंतर है। 'ड़' और 'ढ़' व्यंजन हिंदी में स्वत: ही प्रयुक्त होने लगे, ये संस्कृत में नहीं थे। फिर इनके ध्वनि-चिह्न निश्चित कर दिए गए। ये दोनों ध्वनियाँ हिंदी की अपनी विकसित ध्वनियाँ हैं।

ख. अंतस्थ व्यंजन *(Semi-Vowels)* : इसका शाब्दिक अर्थ है— अंत: अर्थात बीच में 'स्थ' स्थित होना अर्थात जो अक्षर व्यंजनों और स्वरों के बीच में स्थित रहते हैं, उन्हें अंतस्थ कहते हैं। यहाँ बीच में स्थित होने का अभिप्राय उनके उच्चारण से है। जिन वर्णों का उच्चारण न तो पूर्ण रूप से व्यंजनों का होता है और न ही स्वरों का, उन्हें अंतस्थ कहा जाता है। अंतस्थ वर्णों की संख्या चार है— **य्, र्, ल्, व्**।

ग. ऊष्म व्यंजन *(Sibilant)* : इसका शाब्दिक अर्थ है 'गरम'। जिन वर्णों के उच्चारण में मुँह से गरम हवा बाहर निकले और हलकी सीटी की-सी आवाज़ आए, उन वर्णों को ऊष्म वर्ण कहा जाता है। इनकी संख्या भी चार ही है— **श, ष, स, ह**।

Scanned with CamScanner

कुछ विशेष बातें—

क. संयुक्त अक्षर : जब दो अथवा दो से अधिक व्यंजन आपस में मिल जाते हैं तो उन्हें संयुक्त अक्षर कहा जाता है। देवनागरी लिपि में जब दो व्यंजन आपस में मिल जाते हैं तो इनका रूप बदल जाता है और इनको लिखा भी अलग प्रकार से जाता है। इस प्रकार के संयुक्ताक्षरों की संख्या चार है— **क्ष, त्र, ज्ञ, श्र**। ये निम्न प्रकार से बनते हैं—

क् + ष = क्ष = अक्षर त् + र = त्र = नक्षत्र

ज् + ञ = ज्ञ = ज्ञान श् + र = श्र = श्रवण

ख. संयुक्त व्यंजन : जब कोई स्वर रहित व्यंजन स्वरसहित व्यंजन से मिलकर नया अक्षर बनाता है और व्यंजनों की मूल आकृति स्पष्ट नज़र आती है तो उसे संयुक्त व्यंजन कहा जाता है; जैसे— त्याग, बल्ब, सप्ताह आदि। संयुक्त व्यंजनों में दो से अधिक व्यंजनों का संयोग भी हो सकता है; जैसे— स्वास्थ्य।

ग. व्यंजन द्वित्व : जब समान (पहला स्वररहित, दूसरा स्वरसहित) व्यंजन संयुक्त होते हैं तब वे व्यंजन द्वित्व कहलाते हैं; जैसे— बच्चा, मिट्टी, खट्टा, नब्बे आदि।

घ. अनुस्वार : 'अनु + स्वर' अर्थात स्वर के पीछे-पीछे चलने के कारण इन्हें अनुस्वार कहते हैं। यह नासिक्य ध्वनि है जो वर्ण के ऊपर ं लगाकर प्रकट की जाती है। मानक वर्तनी में पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) का प्रयोग अनुस्वार के रूप में किया जाता है। यदि यह कवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो 'ङ्'; जैसे— शंङ्ख = शंख; चवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो 'ञ्'; जैसे— मञ्जन = मंजन; टवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो, 'ण्'; जैसे— डण्डा = डंडा; तवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो न्; जैसे— पन्त = पंत तथा पवर्ग वर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो म्; जैसे— प्रारम्भ = प्रारंभ।

ङ. अनुनासिक : इसका प्रयोग हिंदी में किया जाता है। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें अनुनासिक कहते हैं। अनुनासिक स्वर का चिह्न चंद्रबिंदु (ँ) है।

यह भी जानो

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर

अनुस्वार और अनुनासिक में बहुत अंतर है परंतु आजकल हिंदी में चंद्रबिंदु के स्थान पर केवल अनुस्वार का प्रयोग किया जा रहा है। इससे उच्चारण में दोष तो आते ही हैं, साथ ही हिंदी का स्वरूप भी खंडित होता है।

अनुस्वार अन्य स्वरों और व्यंजनों के समान ही एक स्वतंत्र ध्वनि है किंतु अनुनासिक की ध्वनि स्वतंत्र न होकर नासिक्य स्वर में मिल जाती है।

अनुस्वार के उच्चारण में वायु केवल नाक से निकलती है जबकि अनुनासिक के उच्चारण में वायु मुख और नाक दोनों से एक साथ निकलती है।

अनुस्वार धीमी ध्वनि है और अनुनासिक तीव्र ध्वनि है; जैसे— **दंत और दाँत।**

संस्कृत शब्दों के अंत में जो अनुस्वार आता है, उसका उच्चारण **'म्'** के समान होता है; जैसे— **स्वयं, एवं (एवम्)** आदि। चंद्रबिंदु का प्रयोग प्रायः **अ, आ, उ, ऊ** पर ही किया जाता है; जैसे— **अँधेरा, आँख, ऊँचाई आदि।** मात्रा आने पर अनुस्वार ही नज़र आता है; जैसे— सींचना, नहीं आदि।

Scanned with CamScanner

च. हलंत : प्रत्येक व्यंजन के साथ अ स्वर अवश्य रहता है। किसी भी व्यंजन का उच्चारण बिना 'अ' स्वर की सहायता के नहीं किया जा सकता। जहाँ पर व्यंजनों को स्वररहित दिखाने की आवश्यकता होती है अथवा व्याकरण के किसी नियम का उल्लेख करना होता है तो वहाँ हलंत का प्रयोग किया जाता है; जैसे—'म' को बिना स्वर के दरशाना चाहते हैं तो 'म्' वर्ण के नीचे एक तिरछी रेखा (्) हल् लगाकर लिखेंगे। हलंत चिह्न मूलतः संस्कृत शब्दों के अंत में लगता है। हिंदी में अंतिम व्यंजन अ-रहित होने पर भी उसके नीचे हलंत नहीं लगाया जाता। अंग्रेज़ी, उर्दू, फ़ारसी, अरबी आदि विदेशी शब्दों में इसका प्रयोग नहीं होता।

छ. विसर्ग : इसका प्रयोग संस्कृत में किया जाता है। इसका उच्चारण हलके 'ह' के समान किया जाता है। इसका चिह्न (:) है। हिंदी में इसका प्रयोग वहीं होता है, जहाँ संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—प्रायः, अतः आदि। लेकिन इसका प्रयोग स्वल्प ही है और धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। संस्कृत से हिंदी में आए कुछ पदों में विसर्ग का प्रयोग होता है। संधि में भी विसर्ग सहायक है; जैसे—'अधोगति' शब्द का संधि विच्छेद— अधः+गति, इसी प्रकार 'वयोवृद्ध' का विच्छेद होगा— वयः+वृद्ध।

ज. उर्दू की ध्वनियाँ—नुकता : उर्दू की पाँच ध्वनियों ने हिंदी को प्रभावित किया। क़, ख़, ग़, ज़ और फ़। इन ध्वनियाँ के नीचे लगे बिंदु को नुकता कहा जाता है। हिंदी में अब केवल **ज़** और **फ़** में ही नुकता लगाया जाता है क्योंकि इनके प्रयोग न करने से अर्थ में अंतर आ जाता है; जैसे—सजा और सज़ा, तथा काफी और कॉफ़ी, फन-फ़न, जरा-ज़रा आदि। क, ख, ग में नुकता नहीं लगाया जाता।

ज़ — यह दंत्य संघर्षी-ऊष्म ध्वनि है। इसके उच्चारण में जीभ का अगला भाग मसूढ़े के अग्र भाग को धीरे से छूता है; जैसे— रोज़, ज़ंग, फ़र्ज़, सज़ा, ज़रा आदि।

फ़ — यह दंत-ओष्ठ्य ध्वनि है। इसके उच्चारण में होंठ दाँत को पूरी तरह स्पर्श नहीं करते बल्कि कुछ इस तरह से हलका-सा-स्पर्श करते हैं ताकि हवा घर्षण खाती हुई बाहर निकले; जैसे— दफ़ा, नफ़रत, बर्फ़, शरीफ़ आदि।

झ. अंग्रेज़ी की ध्वनियाँ (आगत स्वर) : जिस प्रकार उर्दू भाषा की ध्वनियों का प्रयोग हिंदी में हो रहा है, उसी प्रकार अंग्रेज़ी के अनेक संज्ञा शब्द हिंदी में इस प्रकार प्रयोग किए जा रहे हैं मानो वे हिंदी के ही हों। अंग्रेज़ी भाषा की ऐसी ही ध्वनि है—'**ऑ**'। यह ध्वनि अंग्रेज़ी के कुछ शब्दों को शुद्ध रूप से लिखने और बोलने के लिए हिंदी में स्वीकार की गई है; जैसे— ऑफ़िस, हॉल, मॉडर्न, बॉल, फॉर्म, कॉलेज, गॉड, डॉक्टर आदि।

बॉल

कॉफ़ी

डॉक्टर

उच्चारण

वर्णों का उच्चारण करते समय अंदर से आती हुई श्वास मुख के अवयव-विशेष से टकराती है और उस स्थान को झंकृत (Jingling) करती हुई निकल जाती है। गले से ध्वनि चलती है और मुख तक आते-आते वह किसी भीतर के ही स्थान से टकराकर रुक जाती है, जहाँ वह ध्वनि पूर्ण हो जाती है। वह स्थान जहाँ ध्वनि पूर्णता को प्राप्त करती है, उच्चारण स्थान कहलाता है।

Scanned with CamScanner

उच्चारण स्थान मुख्य रूप से छह हैं— कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, नासिका। समस्त व्यंजनों को इन्हीं उच्चारण स्थानों में बाँटा जाता है अथवा दो उच्चारण स्थान आपस में मिल भी सकते हैं और कोई वर्ण एक से अधिक उच्चारण स्थानों से बोला जा सकता है।

क. कंठ : **क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्** और **विसर्ग**। इनके उच्चारण में जीभ का पिछला भाग गले को छूता है। अत: इन वर्णों का स्थान '**कंठ**' है।

ख. तालु : **च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्**। इनके उच्चारण में जीभ मुँह के ऊपरी हिस्से से टकराती है। अत: इनका उच्चारण स्थान '**तालु**' है।

ग. ओष्ठ : **प्, फ्, ब्, भ, म्**। इन व्यंजनों के उच्चारण में ऊपर-नीचे के होंठ आपस में टकराते हैं, अत: इनका उच्चारण स्थान '**ओष्ठ**' है।

घ. मूर्धा : मूर्धा का स्थान दाँतों के पिछले हिस्से की ऊपर की जगह है। **ऋ, ट्, ठ्, ड्, ण्, र्, ष्** इन वर्णों का उच्चारण स्थान '**मूर्धा**' है। जिह्वा जब मुँह के अंदर उभरे हुए भाग से टकराती है तो इन वर्णों का उच्चारण होता है।

ङ: दंत : जब जिह्वा दाँतों से टकराती है और वर्णों का आगमन होता है तो उन वर्णों के उच्चारण स्थान को दंत्य कहते हैं। **त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्** वर्णों का उच्चारण दाँतों की सहायता से किया जाता है।

च. नासिका : कुछ वर्ण ऐसे होते हैं जिनके उच्चारण में जिह्वा मुख के भीतर भिन्न अवयवों से टकराती है और साथ ही साथ नासिका भी उसमें कार्य करती है; जैसे— **ङ्, ञ्, ण्, न्, म्**। इनमें से '**ण्**' मूर्धा से तो बोला ही जाता है लेकिन नासिका से भी वायु निसृत होती है। इसी प्रकार '**न्**' दंत्य वर्ण है लेकिन नासिका में भी क्रिया होती है, अत: ये वर्ण '**नासिक्य**' भी हैं।

संयुक्त उच्चारण स्थान

इसके अतिरिक्त कुछ वर्ण ऐसे होते हैं, जिनके उच्चारण में दो अलग-अलग उच्चारण स्थानों का प्रयोग एक साथ होता है अर्थात कोई एक अक्षर दो अलग-अलग उच्चारण स्थानों से एक साथ बोला जाता है; जैसे— '**औ**' स्वर के उच्चारण में कंठ और ओष्ठ दोनों साथ-साथ क्रिया करते हैं तो '**औ**' स्वर का स्थान होगा 'कंठोष्ठ'। अत: इन 'संयुक्त उच्चारण स्थानों' के तीन प्रकार हैं :

क. कंठतालु ख. कंठोष्ठ ग. दंतोष्ठ

क. कंठतालु : अर्थात जो वर्ण कंठ या तालु की मदद से बोले जाएँ। **ए, ऐ** दो स्वर हैं और ये जब उच्चारित किए जाते हैं तो जीभ नीचे के दाँतों के पिछले भाग से टकराती है और ये स्वर निसृत होते हैं। हम जानते हैं कि '**ए**' स्वर **अ+इ** से मिलकर बना है और इसी प्रकार **अ+ए=ऐ**। **अ** का उच्चारण स्थान कंठ है और **इ** का तालु। अत: इन दोनों के मेल से होने के कारण **ए, ऐ** '**कंठतालव्य**' वर्ण कहे जाएँगे।

ख. कंठोष्ठ : अर्थात जो वर्ण कंठ और ओष्ठ की मदद से उच्चारित किए जाएँ। **ओ, औ** ये दो स्वर हैं तथा जब बोले जाते हैं तो कंठ और ओष्ठ दोनों की मदद ली जाती है। हम जानते हैं कि **अ+उ=ओ, अ+ओ=औ** होता है और **अ** का उच्चारण स्थान कंठ है तथा **उ, ओ** का स्थान ओष्ठ है, अत: परस्पर दोनों के मिलने से ओ, औ बोले जाते हैं। अत: इनका उच्चारण स्थान कंठोष्ठ है तथा **ओ** और **औ** को '**कंठोष्ठ्य**' वर्ण कहा जाएगा।

ग. दंतोष्ठ : अर्थात जो वर्ण दाँत और ओष्ठ के माध्यम से बोले लाएँ; जैसे— '**व**', '**फ**' व्यंजन हैं और इनका उच्चारण तब होता है जब होंठ पर दाँतों का हलका-सा स्पर्श किया जाता है; अत: '**व**', को '**दंतोष्ठ्य**' व्यंजन या वर्ण कहा जाएगा।

Scanned with CamScanner

'र' के विविध संयोग

व्यंजनों में 'र' की स्थिति अन्य व्यंजनों से न केवल अलग है अपितु इसके अनेक रूप भी देखने को मिलते हैं; जैसे—

क.	र	र	रोना	रबड़	रोक	रेत
ख.	र्	◌र्◌	कर्म	निर्णय	कार्य	मूर्ति
ग.	र	◌्र	प्रतिकूल	ब्रेल	ग्रंथ	अंग्रेज़ी
घ.	र	◌्र	ड्रम	ट्रक	राष्ट्रीय	उष्ट्र

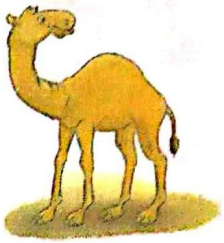

क. अ-सहित र : यह एक पूर्ण व्यंजन है अर्थात र् + अ = र। यह **'र्' अ-सहित** है।

ख. अ-रहित र् (◌र्◌) : इस र् में 'अ' नहीं है अर्थात यह अ-रहित है। यह र् जिस व्यंजन के साथ जुड़ता है उसी के सिर पर (◌र्◌) लिखा भी जाता है और उससे पहले बोला जाता है; जैसे—

धर्म = ध् + अ + र् + म् + अ। यहाँ र् के बाद अ नहीं आया है। यदि र के अगले व्यंजन पर कोई मात्रा लगी हो तो '◌र्◌' उस मात्रा पर लग जाता है; जैसे— शर्मा, वर्मा आदि। व्याकरणिक भाषा में इसे **'रेफ'** कहते हैं।

ग. अ-सहित र (◌्र) : इस 'र' में अ-शामिल है अर्थात यह अ-सहित है। यह र स्वररहित व्यंजन के नीचे (/) रूप में लगाया जाता है। इसको इस प्रकार समझें—

- **क्रम = क् + र् + अ + म् + अ**
- **कर्म = क् + अ + र् + म् + अ**

घ. अ-सहित र (◌्र) : यह रूप केवल **ट्, ठ्, ड्, ढ्** के हलंत रूपों या अ-रहित रूपों के साथ आता है। यहाँ भी 'र' पूरा है अर्थात इस र में अ स्वर जुड़ा हुआ है; जैसे—

- **ड्रम = ड् + र् + अ + म् + अ**
- **ट्रक = ट् + र् + अ + क् + अ**

वर्ण-विच्छेद

वर्ण भाषा की लघुतम अर्थात सबसे छोटी इकाई है। वर्ण के और टुकड़े या खंड नहीं किए जा सकते; जैसे—क्, ख् आदि। वर्ण-विच्छेद का तात्पर्य किसी शब्द में आए वर्णों और ध्वनियों को अलग-अलग करके जानना है। दूसरे शब्दों में यह जानना कि शब्द की संरचना कैसे हुई है; जैसे—'धर्म' शब्द में तीन ध्वनियाँ और तीन ही आकृतियाँ अथवा वर्ण दिखाई दे रहे हैं परंतु प्रत्येक वर्ण के साथ अन्य ध्वनियाँ भी हैं; जैसे— ध् + अ + र् + म् + अ

- विद्या — व् + इ + द् + य् + आ
- ऋषि — ऋ + ष् + इ
- उन्नति — उ + न् + न् + अ + त् + इ

वर्ण-विच्छेद के कुछ नियम इस प्रकार हैं—

1. संयुक्त व्यंजन—

- क्ष → परीक्षा — प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
- त्र → पवित्र — प् + अ + व् + इ + त् + र् + अ
- ज्ञ → विज्ञान — व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ
- श्र → विश्राम — व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ

Scanned with CamScanner

2. द्वित्व व्यंजन—

- ड्ड → हड्डी — ह् + अ + ड् + ड् + ई
- ट्ट → छुट्टी — छ् + उ + ट् + ट् + ई
- क्क → पक्का — प् + अ + क् + क् + आ
- त्त → पत्ता — प् + अ + त् + त् + आ

3. कुछ विशेष वर्ण-विच्छेद देखें—

- द्य → द्य → विद्या — व् + इ + द् + य् + आ
- द्व → द्व → विद्वान — व् + इ + द् + व् + आ + न् + अ
- ह्व → ह्व → विह्वल — व् + इ + ह् + व् + अ + ल् + अ

4. 'र' के विभिन्न रूप— 'र' की स्थिति अन्य व्यंजनों से बहुत अलग है क्योंकि 'र' का प्रयोग अनेक रूपों में होता है; जैसे—

- राकेश — र् + आ + क् + ए + श् + अ
- वार्ता — व् + आ + र् + त् + आ
- प्रदीप — प् + र् + अ + द् + ई + प् + अ
- राष्ट्र — र् + आ + ष् + ट् + र् + अ

5. अनुस्वार— वर्ण-विच्छेद में अनुस्वार की स्थिति नीचे दिए गए उदाहरणों के आधार पर प्रदर्शित की जा सकती है—

- कंगन — कङ्गन — क् + अ + ङ् + ग् + अ + न् + अ

या

क् + अ + ं + ग् + अ + न् + अ (*या* अं)

संकेत— उपर्युक्त व्यवस्था छात्रों के स्तर को ध्यान में रखकर स्वीकार की जा सकती है। धीरे-धीरे नियमों की सम्यक जानकारी होने पर पंचमाक्षर नियम के अनुसार स्वीकार करें।

6. अनुनासिक— अनुनासिक अर्थात सभी दस स्वर; जैसे—

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ एँ ऐँ ओँ औँ

चंद्रबिंदु ँ सदैव वर्ण में लगे स्वर के साथ ही आता है; जैसे—

- आँगन — आँ + ग् + अ + न् + अ
- पूँछ — प् + ऊँ + छ् + अ
- चिड़ियाँ — च् + इ + ड़् + इ + य् + आँ
- आँखें — आँ + ख् + ऐँ
  या
  आँ + ख् + ऐ + चंद्रबिंदु

संकेत— मात्रा ऊपर लगने पर बिंदु नज़र आता है परंतु वर्ण-विच्छेद में चंद्रबिंदु ही दरशाया जाता है।

7. सम्-विषयक वर्ण-विच्छेद - सम् उपसर्ग युक्त शब्दों का उच्चारण न् और म् ध्वनि के साथ किया जाता है। परंतु उसमें 'सम्' उपसर्ग ही होता है; जैसे—

- संबंध — म् उच्चारण — स् + अ + म् + ब् + अ + न् + ध् + अ
- संशय — न् उच्चारण (भ्रांतिवश) — स् + अ + म् + श् + अ + य् + अ

स के ऊपर लगे बिंदु को 'म्' स्वीकार कर वर्ण-विच्छेद करें; जैसे—

- संवाद — स् + अ + म् + व् + आ + द् + अ
- संन्यासी — स् + अ + म् + न् + य् + आ + स् + ई
- संधि — स् + अ + म् + ध् + इ
- सन्तान — संतान — स् + अ + म् + त् + आ + न् + अ (सम् + तप् + घञ्)
- सन्दर्भ — संदर्भ — स् + अ + म् + द् + अ + र् + भ् + अ (सम् + दृभ् + घञ्)

Scanned with CamScanner

यह भी जानो

❀ ड् (हलंत) इस प्रकार लिखा जाता है और जब इसमें र लगा दिया जाएगा तो इसका रूप बन जाएगा (ड् + र = ड्र)। इस संयोग से बननेवाले अधिकतर शब्द विदेशी हैं। हिंदी में केवल दो शब्द प्राप्त होते हैं— राष्ट्र और उष्ट्र किंतु द् और ह् व्यंजन इसका अपवाद हैं। इन वर्णों के साथ (्र) रूप का ही प्रयोग किया जाता है; जैसे— **द्रव्य, ह्रास** आदि। इसका कारण इन वर्णों का स्वरूप ही है।

❀ **र और ऋ (ृ) का भ्रम :** ऋ एक स्वर है और अन्य स्वरों की तरह इसकी मात्रा (ृ) है, जिसका उच्चारण 'रि' होता है। मूलत: यह संस्कृत की ध्वनि है और संस्कृत भाषा के ही शब्द इसमें प्राप्त होते हैं; जैसे—**ऋषि, ऋतु, ऋण** आदि। 'रि' उच्चारण होने के कारण यह भ्रांति है कि यह भी 'र' अथवा रेफ का ही कोई रूप है परंतु ऐसा नहीं है। यह स्वर है और (ु), (ू) आदि की तरह ही (ृ) मात्रा व्यंजनों के नीचे लगती है; जैसे—**गृह, कृष्ण, सृजन, वृत्ति, नृत्य, कृमि, तृण, तृप्ति, पृथक** आदि। ऋ मात्रायुक्त शब्द तत्सम होते हैं।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें— *(Understanding)*

i. ग, झ, द, ब को ..... व्यंजन कहते हैं।

ii. य, र, ल, व को ..... व्यंजन कहते हैं।

iii. 'क्ष' अक्षर क् और ..... से मिलकर बनता है।

iv. 'ज्ञ' में ..... और ..... का योग है।

v. क्ष, त्र, ज्ञ और क्ष को ..... कहते हैं।

vi. श्, ष् को ..... कहते हैं।

vii. उर्दू की ध्वनियाँ हैं— .....।

2. निम्नलिखित शब्दों में गलत 'र' चिह्न लगे हुए हैं, उन्हें ठीक करके पुन: लिखिए— *(Synthesizing)*

पूर्ण —	भ्राया —	शौर्य — .....
पूरति —	म्रदुल —	त्रतक — .....
पूर्व —	शम्र —	स्रप — .....
परयोग —	गर्ह —	दरशन — .....
परेरित —	व्रणन —	टरेड — .....
बारह्मण —	वष्रा —	पर्थम — .....
भ्रतरिहरि —	शूर्द —	दुरयोधन — .....

Scanned with CamScanner

3. **नुकता लगाइए—**

जबरन	—	....	बरफ	—	....	कफन	— ....
जंजीर	—	....	जहाज	—	....	फकीर	— ....
दफा	—	....	जिक्र	—	....	नमाज	— ....
फिदा	—	....	नफरत	—	....	जमीन	— ....

4. **निम्नलिखित शब्दों को पढ़कर नुकते के कारण आए अर्थ-भेद को लिखिए—** *(Analyzing, Synthesizing)*

दफा	—	कितनी बार	दफ़ा	—	कानून की धारा
सजा	—	....	सज़ा	—	....
राज	—	....	राज़	—	....
जरा	—	....	ज़रा	—	....
फन	—	....	फ़न	—	....

5. **वर्ण-विच्छेद कीजिए—** *(Understanding)*

पर्यावरण	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...+...	तटस्थता	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...
प्रतिध्वनि	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...+...	साप्ताहिक	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...
दर्शनीय	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...	मार्मिक	—	...+...+...+...+...+...+...
व्याख्यान	—	...+...+...+...+...+...+...+...	विद्यार्थी	—	...+...+...+...+...+...+...+...
सेवाग्राम	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...	आह्वान	—	...+...+...+...+...+...
कलाभिज्ञ	—	...+...+...+...+...+...+...+...+...	श्रीमान	—	...+...+...+...+...+...+...

6. **उचित स्थान पर अनुस्वार-अनुनासिक लगाकर वर्तनी शुद्ध कीजिए—** *(Applying, Understanding)*

दिनाक	—	....	जतुओ	—	....	गाधी	— ....
आदोलन	—	....	आगन	—	....	करेगे	— ....
तागा	—	....	अतिम	—	....	उगली	— ....
चिड़िया	—	....	सबध	—	....	बूद	— ....
मडल	—	....	प्रारभ	—	....	चादनी	— ....
पगु	—	....	मुद्राए	—	....	मगवाई	— ....
जाएगे	—	....	सकल्प	—	....	स्वतत्र	— ....
अधेरा	—	....	सस्कार	—	....	साप	— ....

Scanned with CamScanner